एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए सूचना एवं प्रसार कार्यक्रम

डॉ. डी. वी. सिंह[1] एवं *डॉ. प्रियंका चंद[2]
[1]प्रधान वैज्ञानिक, अटारी- पटना, बिहार, भारत
[2]सहायक प्राध्यापक, श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: priyankachand.pc28@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि न केवल अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि करोड़ों किसानों की आजीविका का भी मुख्य स्रोत है। बदलते जलवायु परिदृश्य, भूमि क्षरण, कीट-रोग प्रबंधन की चुनौतियाँ, और आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी के अभाव में किसानों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए सूचना एवं प्रसार कार्यक्रम (Information and Extension Programs) अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कार्यक्रम किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकों, सरकारी योजनाओं एवं बाजार की जानकारी पहुँचाने का कार्य करते हैं, जिससे वे अपनी कृषि उत्पादकता और आय में वृद्धि कर सकें।

कृषि सूचना एवं प्रसार कार्यक्रम का महत्त्व

सूचना एवं प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को कृषि संबंधी ज्ञान और संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे वे नवीनतम वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर अपनी कृषि प्रणाली को अधिक उत्पादक और टिकाऊ बना सकें।

सबसे पहला लाभ यह है कि ये कार्यक्रम किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों की जानकारी प्रदान करते हैं। इसमें उन्नत बीजों का उपयोग, जैविक खेती, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, और कीट प्रबंधन जैसी विधियाँ शामिल हैं, जो किसानों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में सहायक होती हैं। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे पीएम-किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि यंत्रीकरण योजना आदि की जानकारी प्रदान कर किसानों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है।

मौसम आधारित परामर्श भी सूचना प्रसार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मौसम की सटीक भविष्यवाणी के आधार पर किसानों को उनकी कृषि गतिविधियाँ नियोजित करने में सहायता मिलती है, जिससे संभावित प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। साथ ही, डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से किसानों को बाजार से जोड़ा जाता है, जिससे वे अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त कर सकें। ई-नाम (e-NAM) जैसे ऑनलाइन प्लेटफार्म किसानों को राष्ट्रीय कृषि बाजार से जोड़ने में अहम भूमिका निभाते हैं।

इसके अलावा, जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए भी प्रसार कार्यक्रमों का उपयोग किया जाता है, जिससे किसानों को कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने में मदद मिलती है।

भारत में प्रमुख सूचना एवं प्रसार कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) किसानों को क्षेत्र-विशिष्ट तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इन केंद्रों के माध्यम से किसानों को फील्ड डेमोंस्ट्रेशन, ऑन-फार्म ट्रायल और किसान मेलों का आयोजन करके व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। यह कार्यक्रम किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ने में सहायक होता है।

डिजिटल कृषि प्रसार

तकनीक के बढ़ते उपयोग के साथ, डिजिटल प्लेटफार्म कृषि सूचना प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं। किसान कॉल सेंटर (KCC) टोल-फ्री नंबर (1800-180-1551) के माध्यम से किसानों को विशेषज्ञों से कृषि संबंधी परामर्श प्रदान करता है। mKisan पोर्टल एसएमएस और मोबाइल अलर्ट के माध्यम से किसानों को मौसम, बाजार और फसल प्रबंधन से जुड़ी जानकारी भेजता है। इसके अलावा, ई-नाम (e-NAM) ऑनलाइन व्यापार का एक प्रभावी मंच प्रदान करता है, जिससे किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलती है।

ऑल इंडिया रेडियो एवं दूरदर्शन

रेडियो और टेलीविजन जैसे पारंपरिक माध्यम भी सूचना प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूरदर्शन के 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम और ऑल इंडिया रेडियो पर प्रसारित विभिन्न क्षेत्रीय कृषि कार्यक्रम किसानों तक कृषि संबंधी नवीनतम जानकारी पहुँचाने में सहायक होते हैं। इन माध्यमों की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होती है, जिससे अधिक से अधिक किसान लाभान्वित होते हैं।

सहकारी समितियाँ और एनजीओ

सहकारी समितियाँ जैसे आईएफएफसीओ और कृभको किसानों को उर्वरक, बीज और तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। साथ ही, गैर-सरकारी संगठन (NGOs) किसानों को टिकाऊ कृषि विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इन संगठनों के सहयोग से किसानों को नवीनतम कृषि जानकारी और संसाधन आसानी से उपलब्ध हो पाते हैं।

सूचना एवं प्रसार कार्यक्रमों की चुनौतियाँ

हालाँकि, सूचना एवं प्रसार कार्यक्रमों के समक्ष कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी समस्या तकनीकी संसाधनों की कमी है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और स्मार्टफोन की सीमित उपलब्धता है। इसके अलावा, किसानों में जागरूकता की कमी भी एक गंभीर मुद्दा है, जिससे कई सरकारी योजनाओं और तकनीकी जानकारी का लाभ वे सही समय पर नहीं उठा पाते।

एक अन्य चुनौती स्थानीय भाषा में जानकारी का अभाव है। अधिकांश किसान अंग्रेजी भाषा नहीं समझते, जिससे कृषि से संबंधित तकनीकी ज्ञान उन तक प्रभावी रूप से नहीं पहुँच पाता। इसके अतिरिक्त, कई प्रसार कार्यक्रम शुरू तो होते हैं, लेकिन उनकी प्रभावी निगरानी का अभाव होने के कारण वे किसानों तक सही रूप में नहीं पहुँच पाते।

समाधान और सुझाव

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, डिजिटल प्लेटफार्मों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि किसान मोबाइल एप्स और ऑनलाइन वीडियो के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकें। साथ ही, स्थानीय भाषा में सामग्री तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे हर किसान इसे आसानी से समझ सके।

इसके अलावा, गाँवों में कृषि प्रशिक्षण केंद्र खोले जाएँ, जहाँ किसान व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। सरकार, निजी क्षेत्र और स्वयंसेवी संस्थाओं के संयुक्त प्रयास से सूचना एवं प्रसार कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। AI और IoT आधारित कृषि समाधान, जैसे स्मार्ट कृषि निगरानी प्रणाली, सेंसर-आधारित सिंचाई, और ड्रोन तकनीकों को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

नीति-निर्माताओं के लिए सिफारिशें

सरकार को सूचना प्रसार कार्यक्रमों को अधिक स्थानीयकृत बनाना चाहिए ताकि किसान आसानी से इनका लाभ उठा सकें। इसके साथ ही, किसान उत्पादक संगठनों (FPO) और सहकारी समितियों को प्रसार गतिविधियों में सक्रिय भागीदार बनाया जाना चाहिए। प्रसार कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन और मूल्यांकन के लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

सूचना एवं प्रसार कार्यक्रम कृषि उत्पादन को बढ़ाने और किसानों की आय में सुधार के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। डिजिटल तकनीकों, रेडियो, टीवी और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को नवीनतम कृषि ज्ञान प्रदान करना समय की आवश्यकता है। सरकार और अन्य संस्थानों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि हर किसान तक सही जानकारी सही समय पर पहुँचे, जिससे भारतीय कृषि को एक नई दिशा मिल सके। प्रभावी प्रसार से ही आत्मनिर्भर किसान और समृद्ध भारत का सपना साकार हो सकता है।